सामाजिक नियंत्रण की क्रियाविधि या युक्ति
(Mechanism of Social Control)

टॉलकॉट पारसन्स ने मुख्य रूप से सामाजिक नियंत्रण की क्रियाविधि की चर्चा की है। पारसन्स प्रकार्यवादी सैद्धान्तिक परम्परा के समाजशास्त्री हैं। इस विचारधारा के अनुसार सामाजिक व्यवस्था की प्रत्येक इकाई समाज की किसी-न-किसी आवश्यकता को पूरी करने के लिए है और इसी से सामाजिक व्यवस्था अपने प्रतिमानों को बनाये रखती है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यवहार सामाजिक मूल्य से विचलित होता है, तो इससे समाज का प्रतिमान खतरे में पड़ सकता है। अतः ऐसे व्यवहार को प्रस्फुटित होने से पहले ही दबा देना चाहिए। पारसन्स के अनुसार विचलनकारी व्यवहारों के पीछे अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक कारक होते हैं और उनमें सबसे प्रमुख कारक भूमिका-संघर्ष है। हम अधिकतर व्यवहार सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप ही करते हैं, परन्तु कभी-कभी ऐसे भी अवसर आते हैं, जब हमारा व्यवहार सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार नहीं हो पाता है।

पार्सन्स ने भूमिका संघर्ष के अर्थ को समझाते हुए कहा है कि समाज में एक ही व्यक्ति से कभी-कभी एक ही समय में दो विरोधी भूमिकाओं की आशा की जाती है। ऐसी स्थिति में वह यह निर्णय नहीं कर पाता है कि दो विरोधी भूमिकाओं में से किस भूमिका को वह पहले अदा करे। उदाहरणस्वरूप :- एक पुलिस अफसर से कभी-कभी दो भिन्न भूमिकाओं की अपेक्षा की जा सकती है। जैसे—